ISSN: 3107-3883 (Online)

Global E-Journal of Social Scientific Research
Vol. 1| Issue 7| July 2025| pp 57-70

जनपद-मैंनपुरी में ग्रामीण विकास योजनाओं का तुलनात्मक विश्लेषणः एक सांख्यिकीय अध्ययन

श्री–ज्ञान प्रकाश, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा
gyanprakash150786@gmail.com

प्रोफेसर–नेलिया लोइस चौहान, भूगोल विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष,
सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा
nelialois.chauhan@yahoo.in

ग्लोबल सेंटर ऑफ सोशल डायनामिक रिसर्च
वॉल. 1। संस्करण 7। जुलाई 2025। पृष्ठ संख्या 57–70

सारांश

यह शोध–पत्र जनपद–मैंनपुरी के ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न विकास योजनाओं के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का सांख्यिकीय एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में लघु, सीमान्त, उपसीमान्त कृषकों एवं भूमिहीन श्रमिकों को प्राप्त भौतिक संसाधनों, ऋण एवं अनुदानों का प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर विश्लेषण किया गया। परिणामों से स्पष्ट होता है कि पशुपालन क्षेत्र, विशेषकर भैंस पालन, में सर्वाधिक लाभार्थी (77.08:) हैं, जबकि कृषि एवं सिंचाई उपकरणों का वितरण अपेक्षाकृत कम है। सीमान्त कृषकों को सर्वाधिक संसाधन मिले हैं, परंतु उपसीमान्त कृषकों, भूमिहीन श्रमिकों एवं अनुसूचित जातियों के लिए योजनाओं की पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता है। शोध में पारदर्शी डेटा संग्रहण एवं विश्लेषण पद्धति अपनाई गई है, जिससे नीति–निर्माताओं को योजनाओं की प्रभावशीलता, कमियों एवं सुधार की दिशा तय करने में सहायता मिलती है। भविष्य में, समावेशी एवं संतुलित संसाधन वितरण पर बल देने की आवश्यकता है, ताकि ग्रामीण विकास योजनाओं का अधिकतम लाभ वंचित वर्गों तक पहुँच सके।

Keywords: Rural Development, Mainpuri, Government Schemes, Marginal Farmers, Livelihood, Resource Distribution, Statistical Analysis

प्रस्तावना

जनसंख्या की संरचना, लक्षण एवं विशेषताएं किसी भी क्षेत्र के दीर्घकालिक भौगोलिक कारकों का परिणाम होती हैं। जनपद—मैंनपुरी में सामाजिक—आर्थिक परिवेश में तेजी से बदलाव आ रहा है, जिसमें नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, संस्कृतिकरण और आधुनिकीकरण जैसी प्रक्रियाएं प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। ग्रामीण विकास की अवधारणा के तहत राज्य एवं केंद्र सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाएं लागू की गई हैं, जिनका उद्देश्य निर्बल वर्गों के सामाजिक—आर्थिक उत्थान के लिए वित्तीय सहायता एवं संसाधन उपलब्ध कराना है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन में राष्ट्रीयकृत बैंकों, ग्रामीण बैंकों और सहकारी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिससे निर्धन वर्गों को ऋण एवं अनुदान के माध्यम से रोजगार एवं जीवन स्तर में सुधार के अवसर प्राप्त हुए हैं।

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक एवं जनांकिकीय पृष्ठभूमि

स्थिति एवं विस्तार

उत्तर प्रदेश के आगरा मण्डल में स्थित यह जनपद विस्तार की दृष्टि से 26°53′ उत्तर से 27०31′ उत्तरी अक्षांश एवं 78°27′ पूर्वी देशान्तर से 79°26′ पूर्वी देशान्तर के मध्य वर्ष—2020—21 के अनुसार जनपद—2760 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर विस्तृत है, जनपद में कुल छः तहसीलें—मैंनपुरी, भोगाँव, करहल, कुरावली तथा किशनी व घिरोर (नवसृजित) है। भौगोलिक दृष्टि से मैंनपुरी तहसील—27°05′ से 27°28′ उत्तरी अक्षांश तथा 78°41′ से 79°05′ पूर्वी देशान्तर के मध्य भोगाँव तहसील—26°56′ से 27°28′ उत्तरी अक्षांश से 78°58′ से 79°08′ पूर्वी देशान्तर के मध्य, करहल तहसील—26°58′ से 27°07′ उत्तरी अक्षांश तथा 78°45′ से 79°13′ पूर्वी देशान्तर के मध्य किशनी तहसील—26°52′ से 27°21′ उत्तरी अक्षांश तथा 78°61′ से 79°29′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जबकि घिरोर तहसील—26°53′ से 27०23′ उत्तरी अक्षांश तथा 77°22′ से 78°23′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद में कुल 09 विकास खण्ड क्रमशः मैंनपुरी, घिरोर, कुरावली, बरनाहल, करहल, सुल्तानगंज, बेवर, जांगीर व किशनी हैं। मैंनपुरी जनपद के पश्चिम में फिरोजाबाद, पूरब में फर्रूखाबाद, उत्तर में एटा तथा दक्षिण में इटावा जनपद की सीमा का निर्धारण करते हैं। जबकि जनपद का पूरब से पश्चिम का विस्तार 115 किमी0 तथा उत्तर से पूरब से दक्षिण तक 91 किमी0 अंकित किया गया है।

जनपद—मैंनपुरी में कुल 80 न्याय पंचायतें व 552 ग्राम पंचायतें 807 आबाद ग्राम एवं 34 गैर आबाद ग्राम, 9 नगर केन्द्र हैं जिसमें मैंनपुरी के अतिरिक्त सभी 8 केन्द्र क्रमशः घिरोर, ज्योति, करहल, भोगाँव, किशनी, कुसमरा, बरनाहल एंव बेवर लघुनगर केन्द्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जनपद में वर्ष—2011 के अनुसार 1868529 कुल जनसंख्या निवास करती है जिसमें 993377 पुरूष जनसंख्या व 87512 स्त्री जनसंख्या है जनपद में लिंगानुपात की दृष्टि से वर्ष —2011 के अनुसार प्रति हजार पुरुषों के पीछे 881 स्त्रियाँ हैं। जनपद की कुल 78.26 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर अंकित की गयी है। यहाँ की जलवायु समशीतोष्ण तथा स्वास्थ्य वर्धक है। जनपद में मुख्य रूप से दोमट, काली, बलुई, दोमट, चिकनी, ऊसर तथा भूड प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं, जो विशेष रूप से उपजाऊ होती हैं साथ ही जनपद के भौतिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप का

अध्ययन क्षेत्र के प्राकृतिक भू–दृष्य एवं भौगोलिक कारकों के संरचनात्मक विश्लेषण के रूप में परम आवश्यक हैं। जनपद की स्थिति एवं विस्तार को मानचित्र–1.1 एवं 1.2 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

भौमिकी एवं अपवाह तंत्र

जनपद–मैंनपुरी गंगा, यमुना व दोआव का एक भाग है जो वृहद उत्तरी मैदान की सभी धरातलीय विशेषताओं को प्रतिबिम्बत करता है। वस्तुतः धरातलीय स्थिति इस जनपद के न केवल अपवाह तन्त्र वरन प्राकृतिक वनस्तति को भी दीर्घकाल से प्रभावित करती रही है जिसका मिला–जुला प्रभाव इसकी सामाजिक स्थिति एवं सांस्कृतिक परिवेश में भी परिलक्षित होता है। वस्तुतः बृहद मैंदानी भाग को प्रतिबिम्बित करने वाला यह भाग इसमें प्रवाहित होने वाली नदियों तथा कुछ झीलों एवं तालाबों के द्वारा अपरदित एवं विषम बन गया है। कहीं–कहीं पर विशेषतया काली नदी एवं ईशन नदी के निकटवर्ती भागों में बालू के टिब्बे भी दृष्टिगोचर होते हैं। जनपद जो मध्य गंगा, यमुना व दोआब का एक भाग है, में भौतिक स्वरूप को एक समतल मैदान जिसकी एक विशेषता यहाँ विकसिक अनेक ग्रामीण अधिवासों के स्थलों तथा आम के गहरे जैतूनी रंग में उगे बागों के पेडों के द्वारा जो सभी दिशाओं में दृष्टिगोचर होते हैं, के द्वारा बाधित होते हैं, के रूप में प्रतिरूपित किया जा सकता है।

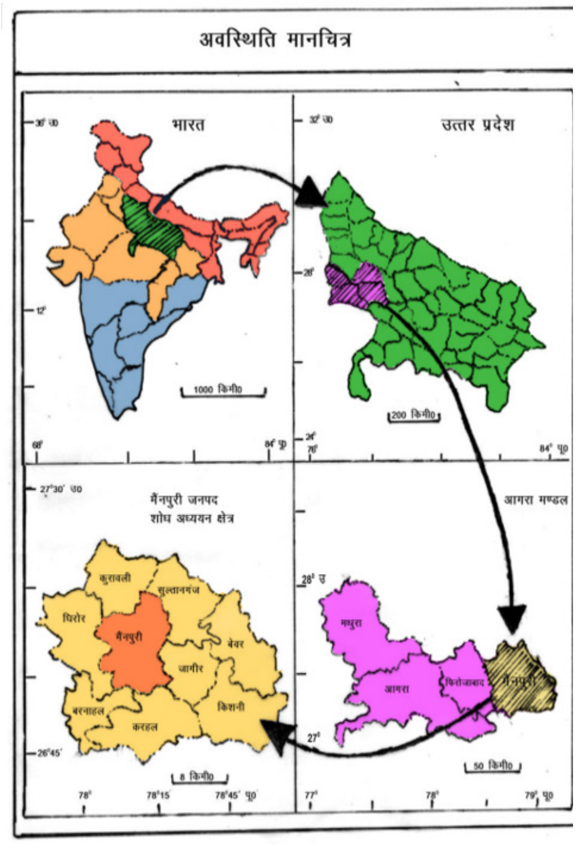

मानचित्र संख्या– 1.1

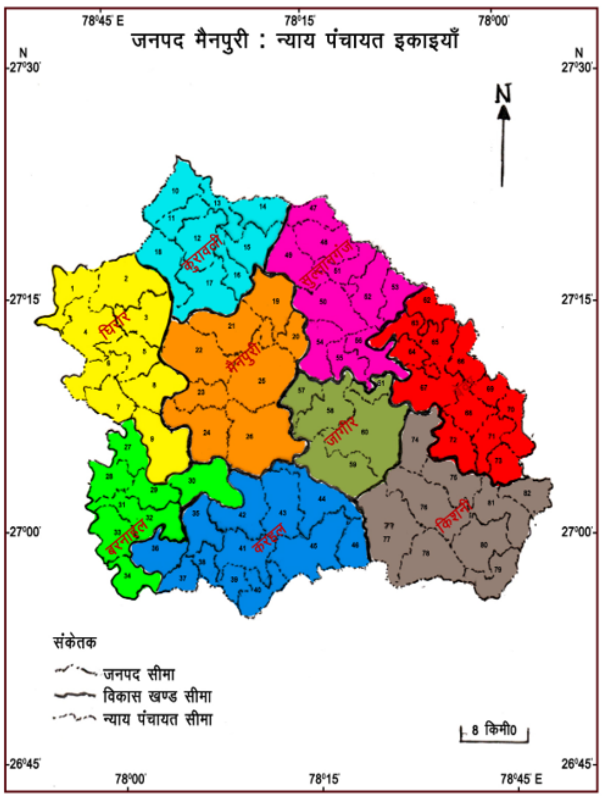

मानचित्र संख्या 1.2

मैंनपुरी जनपद के भौतिक स्वरूप को निम्नलिखित भागों के द्वारा निरूपित किया जा सकता है जो मानचित्र–1.3 के द्वारा दर्शाया गया है।

काली-ईशन-दोआबः

जनपद—मैंनपुरी के उत्तर में महत्वपूर्ण सत्तवाही जलधारा काली नदी पूर्व से पश्चिम को प्रवाहित होती है जिसके समान्तर ईशन नदी इससे 22 से लेकर 26 किमी0 के अन्तराल पर जनपद में प्रभावित होती है। काली नदी के निकटवर्ती भाग में विशेषतया खादर क्षेत्र में कुरावली नगर के उत्तर में बलुई अथवा बालू के निक्षेप पर्याप्त गहराई तक मिलते हैं जिनके वर्षाकाल में अपरदन के परिणाम स्वरूप असम क्षेत्र को प्रतिबिम्बित करते है। इस क्षेत्र में भूमि की उर्वरा शक्ति प्रायः नदी के निकटवर्ती भाग में जलोढ़ निक्षेपों से नवीनीकृत होती रहती है। बालू के कणों का आकार नदी की धारा के दूरी के अनुपात में कम होता जाता है। ईशन नदी के निकटवर्ती क्षेत्रों तक यह महीन कणों काली मिट्टी के रूप में मिलता है।

ईशन-अरिन्द-दोआबः

जनपद—मैंनपुरी में ईशन एवं अरिन्द नदियाँ एक दूसरे के समान्तर 4 से 8 किमी0 के अन्तराल पर पश्चिम से पूर्व को धरातलीय ढाल के अनुरूप प्रवाहित होती है। इस क्षेत्र में मृदा धरातल के नीचे कहीं—कहीं मृतिका की कठोर परत या कंकड़ की परत मिलने से वृहद ऊसर क्षेत्र का निर्माण हुआ है। सम्पूर्ण क्षेत्र एक समतल भू—भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

अरिन्द-सेंगर-दोआबः

इसके अन्तर्गत दक्षिण में स्थित क्षेत्र को समाहित किया जाता है। इस क्षेत्र में कहीं—कहीं सेंगर नदी के निकट जलीय निक्षेप मिलते है तथा मूलतः काली एवं यमुना नदी के मध्य में होने के कारण वांगर क्षेत्र का ही प्रतिनिधित्व करती है। इस क्षेत्र में झील एवं ताल यथा विधूना ताल, समान ताल, देवकली एवं सौज ताल उल्लेखनीय है।

जनपद—मैंनपुरी में समतल धरातल के साथ ही साथ औसत स्थल ऊँचाई के आधार पर शोधार्थी द्वारा समोच्च रेखाओं को आरोपित किया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि 160 मीटर की सर्वोच्च रेखा पश्चिम में उसनीधा ग्राम के निकट से होकर दक्षिण—पश्चिम में आगरा—कानपुर मार्ग के सीमा पर निर्गमन स्थल तक मिलती है जबकि 158 मी0 की सर्वोच्च रेखा कुरावली के उत्तर से होकर पड़रिया चौराहे से होती हुई करहल कस्बे के निकट से गुजरती हुई सीमा पार करती है। 156 मीटर की सर्वोच्च रेखा जैसा कि मानचित्र में दर्शाया गया है उत्तर में आलीपुर खेड़ा से गुजरते हुए पुनः करीमगंज से होकर मैंनपुरी नगर केन्द्र के निकट से गुजरते हुए कुर्रा के निकट मैंनपुरी की दक्षिणी सीमा पर मिलती है। 154 मीटर, 152 मीटर तथा 150 मीटर की सर्वोच्च रेखायें एक दूसरे के समानान्तर मिलती हैं जो उत्तर से दक्षिण की ओर अंकित है जो मानचित्र संख्या—1.4 के द्वारा परिलक्षित होती है।

जनपद—मैंनपुरी का धरातलीय ढाल 8.62 सेमी प्रति किलोमीटर अंकित किया गया है जिसके अनुरूप इसकी जलध ारायें उत्तर—पश्चिम से दक्षिण—पूर्व की ओर प्रावाहित होती है। अपवाह तन्त्र इस जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तनशील मिलता है। मध्य भाग में मुख्य जल धारायें ईशन एवं अरिन्द हैं।

जनपद—मैंनपुरी मे प्रवाहित होने वाली नदियों मे काली नदी प्रमुख सतत वाही नदी है जो मैंनपुरी जनपद में पश्चिम

से पूर्व की ओर प्रवाहित होती है तथा फर्रूखाबाद तथा मैंनपुरी की सीमा के लगभग मध्य से होते हुए गंगा नदी में मिल जाती हैं। अन्य प्रकार की धाराओं में ईशन नदी जो जनपद की पश्चिम सीमा पर नगला कंचन के निकट प्रवेश करती है तथा विसर्पाकार प्रवाह मार्ग से पूर्व की ओर प्रवाहित होते हुए फर्रूखाबाद जनपद में प्रवेश करती है, की काक नदी एक सहायक धारा है। इसके अतिरिक्त अरिन्द नदी, ईशन नदी के समानान्तर पश्चिम से पूर्व को जनपद के मध्य से प्रवाहित होती है जबकि सेंगर नदी जनपद के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली एक मात्र नदी है। ये सभी नदियाँ असत्त वाही है जो

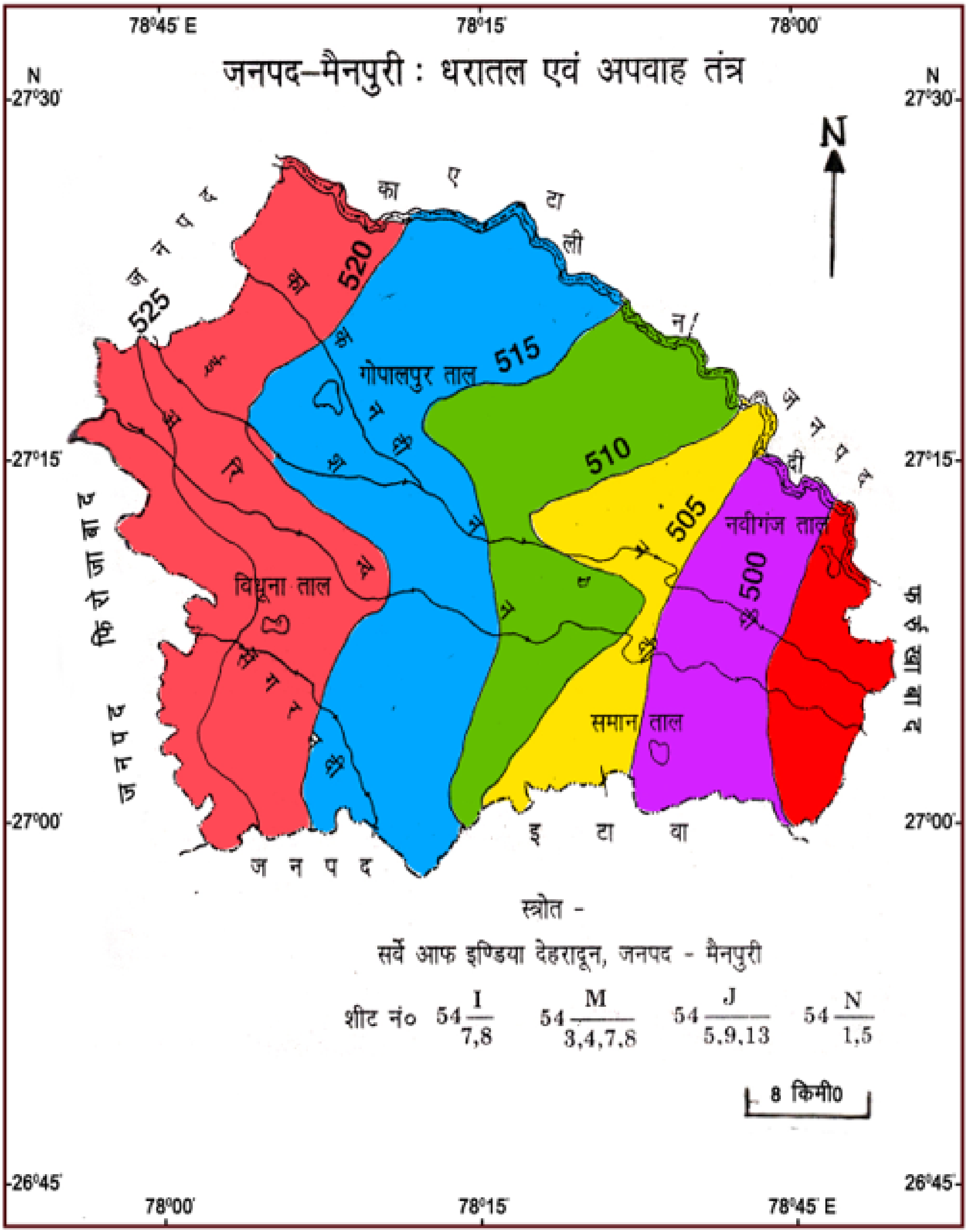

मानचित्र संख्या 1.3

वर्षाकाल में जलाप्लावित होती हैं तथा वर्ष के शेष भाग में इन नदियों में औद्योगिक कारखानों तथा निकट विकसित नगर केन्द्रों का प्रदूषित जल ही प्रवाहित होता है।

जनपद–मैंनपुरी में काक नदी से जुडी हुई 2 झीलें, रसेमर झील तथा करीमगंज झील उल्लेखनीय है। मैंनपुरी शहर के दक्षिण–पश्चिम मे राजा का ताल वृहद ताल है इसके अतिरिक्त किसन्दरपुर झील, गोपालपुर ताल, जिनौरा झील, बसैत, सौज एवं समान झील उल्लेखनीय है। जनपद–मैंनपुरी के मध्य में झील तथा तालाब प्रमुखता से मिलते है। काली नदी के निकटवर्ती भागों में तर एवं दलदली क्षेत्र भी मिलते हैं।

अपवाह तन्त्र इस जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तनशील मिलता है। मध्य भाग में मुख्य जल धारायें ईशन एवं अरिन्द हैं।

जनपद–मैंनपुरी मे प्रवाहित होने वाली नदियों मे काली नदी प्रमुख सतत वाही नदी है जो मैंनपुरी जनपद में पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होती है तथा फर्रुखाबाद तथा मैंनपुरी की सीमा के लगभग मध्य से होते हुए गंगा नदी में मिल जाती हैं। अन्य प्रकार की धाराओं में ईशन नदी जो जनपद की पश्चिम सीमा पर नगला कंचन के निकट प्रवेश करती है तथा विसर्पाकार प्रवाह मार्ग से पूर्व की ओर प्रवाहित होते हुए फर्रुखाबाद जनपद में प्रवेश करती है, की काक नदी एक सहायक धारा है।

ईशन-अरिन्द-दोआबः

जनपद–मैंनपुरी में ईशन एवं अरिन्द नदियाँ एक दूसरे के समान्तर 4 से 8 किमी0 के अन्तराल पर पश्चिम से पूर्व को धरातलीय ढाल के अनुरूप प्रवाहित होती है। इस क्षेत्र में मृदा धरातल के नीचे कहीं–कहीं मृतिका की कठोर परत या कंकड़ की परत मिलने से वृहद ऊसर क्षेत्र का निर्माण हुआ है। सम्पूर्ण क्षेत्र एक समतल भू–भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

अरिन्द-सेंगर-दोआबः

इसके अन्तर्गत दक्षिण में स्थित क्षेत्र को समाहित किया जाता है। इस क्षेत्र में कहीं–कहीं सेंगर नदी के निकट जलीय निक्षेप मिलते है तथा मूलतः काली एवं यमुना नदी के मध्य में होने के कारण वांगर क्षेत्र का ही प्रतिनिधित्व करती है। इस क्षेत्र में झील एवं ताल यथा विधूना ताल, समान ताल, देवकली एवं सौज ताल उल्लेखनीय है।

जनपद–मैंनपुरी में समतल धरातल के साथ ही साथ औसत स्थल ऊँचाई के आधार पर शोधार्थी द्वारा समोच्च रेखाओं को आरोपित किया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि 160 मीटर की सर्वोच्च रेखा पश्चिम में उसनीधा ग्राम के निकट से होकर दक्षिण–पश्चिम में आगरा–कानपुर मार्ग के सीमा पर निर्गमन स्थल तक मिलती है जबकि 158 मी0 की सर्वोच्च रेखा कुरावली के उत्तर से होकर पड़रिया चौराहे से होती हुई करहल कस्बे के निकट से गुजरती हुई सीमा पार करती है। 156 मीटर की सर्वोच्च रेखा जैसा कि मानचित्र में दर्शाया गया है उत्तर में आलीपुर खेड़ा से गुजरते हुए पुनः करीमगंज से होकर मैंनपुरी नगर केन्द्र के निकट से गुजरते हुए कुर्रा के निकट मैंनपुरी की दक्षिणी सीमा पर मिलती है।

154 मीटर, 152 मीटर तथा 150 मीटर की सर्वोच्च रेखायें एक दूसरे के समानान्तर मिलती हैं जो उत्तर से दक्षिण की ओर अंकित है जो मानचित्र संख्या–1.4 के द्वारा परिलक्षित होती है।

जनपद–मैंनपुरी का धरातलीय ढाल 8.62 सेमी प्रति किलोमीटर अंकित किया गया है जिसके अनुरूप इसकी जलधारायें उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर प्रावाहित होती है।

इसके अतिरिक्त अरिन्द नदी, ईशन नदी के समानान्तर पश्चिम से पूर्व को जनपद के मध्य से प्रवाहित होती है जबकि सेंगर नदी जनपद के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली एक मात्र नदी है। ये सभी नदियाँ असत्त वाही है जो वर्षाकाल में जलाप्लावित होती हैं तथा वर्ष के शेष भाग में इन नदियों में औद्योगिक कारखानों तथा निकट विकसित नगर केन्द्रों का प्रदूषित जल ही प्रवाहित होता है।

जनपद–मैंनपुरी में काक नदी से जुडी हुई 2 झीलें, रसेमर झील तथा करीमगंज झील उल्लेखनीय है। मैंनपुरी शहर के दक्षिण–पश्चिम मे राजा का ताल वृहद ताल है इसके अतिरिक्त किसन्दरपुर झील, गोपालपुर ताल, जिनौरा झील, बसैत, सौज एवं समान झील उल्लेखनीय है। जनपद–मैंनपुरी के मध्य में झील तथा तालाब प्रमुखता से मिलते है। काली नदी के निकटवर्ती भागों में तर एवं दलदली क्षेत्र भी मिलते हैं।

जलवायु

जनपद की जलवायु मृदुल मानसूनी है, जिसमें शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु प्रमुख हैं। औसत वार्षिक वर्षा 770.4 मिमी है।

तालिका संख्या-1ः जनपद-मैंनपुरी में जलवायु दशायें (2010-2020)

माह/ऋतु	तापमान डिग्री सेल्यियस में औसत अधिकमत एवं न्यूनतम मासिक वार रिकोर्ड	वायुदाब मिलीबार	वायुगति किमी0 प्रतिघण्टा	आर्द्रता प्रतिशत में	वर्षा (मिमी0)
नवम्बर	19.4 32.7 04.2	995.82	0.47	51	4.43
दिसम्बर	17.2 26.9 01.5	1004.04	1.78	60	5.04
जनवरी	16.3 29.4 01.8	1004.20	2.28	58	7.00
फरवरी	20.0 36.2 00.8	994.84	2.82	61	9.18
शीत ऋतु	**18.5 36.2 00.8**	**998.82**	**1.75**	**56**	**25.65**
मार्च	22.9 42.3 05.3	995.01	3.64	37	7.65
अप्रैल	28.8 43.9 11.2	987.80	3.65	28	6.30
मई	35.0 46.8 15.9	982.04	4.21	29	17.61
जून	36.0 48.0 18.8	981.87	4.32	52	81.12
ग्रीष्म ऋतु	**30.7 47.5 05.8**	**986.02**	**4.09**	**36**	**112.68**
जुलाई	31.8 46.8 20.0	982.52	2.41	76	221.21
अगस्त	30.1 41.9 21.7	981.98	3.05	76	232.49
सितम्बर	28.9 41.0 17.8	986.92	3.00	69	144.00
अक्टूबर	24.7 40.1 10.5	993.12	2.01	54	22.52
वर्षा ऋतु	**28.8 45.7 10.4**	**995.91**	**2.38**	**70**	**620.22**

स्रोत: कार्यालय मौसम विभाग जनपद-मैंनपुरी (उ0प्र0) वर्ष-2010-2020 एवं Regional Meteoralogical Center, New Delhi, 2017-2018

GJSSR

मृदा एवं प्राकृतिक संसाधन

यहाँ की मुख्य मृदा प्रकार– दोमट, काली, बलुई, ऊसर आदि हैं, जो कृषि के लिए उपजाऊ हैं। जलाशय, झीलें, तालाब, दलदली क्षेत्र भी यहाँ पाए जाते हैं।

जनांकिकीय स्थिति

2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 18,68,529 है, साक्षरता दर 78.26ः और लिंगानुपात 881 है। कुल 807 आबाद ग्राम और 9 नगर केंद्र हैं।

शोध की नवीनता एवं महत्व

यह अध्ययन जनपद–मैंनपुरी के संदर्भ में ग्रामीण विकास योजनाओं के तुलनात्मक प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें योजनाओं के लाभार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, संसाधनों के वितरण की पारदर्शिता, और नीति–निर्माण के लिए उपयोगी सुझावों का समावेश है, जो इस क्षेत्र में मौजूदा शोध को और समृद्ध करता है।

अध्ययन की पद्धति

इस अध्ययन में जनपद–मैंनपुरी के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों के लघु, सीमान्त, उपसीमान्त कृषक एवं भूमिहीन श्रमिक परिवारों को विभिन्न विकास योजनाओं के अंतर्गत मिले लाभांश, ऋण एवं भौतिक संसाधनों का सर्वेक्षण एवं विश्लेषण किया गया।

डेटा स्रोतः

- कार्यालय जिला संख्याधिकारी जनपद–मैंनपुरी (2019–20)
- निजी सर्वेक्षण (2020–21)
- लाभार्थियों का चयनः
- लघु, सीमान्त, उपसीमान्त कृषक एवं भूमिहीन श्रमिक
- डेटा संग्रहणः
- प्राथमिकः लाभार्थी परिवारों का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण
- द्वितीयकः सरकारी रिपोर्ट, बैंक रिकॉर्ड
- मुख्य योजनाएंः
- किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, आदि
- विश्लेषणः
- तालिकाओं, प्रतिशत, औसत, श्रेणीवार वितरण एवं तुलनात्मक अध्ययन

आंकड़ों का विश्लेषण

सटीक आंकड़ों का उपयोग करने के लिए आवश्यक कदम

1. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का संयोजनः
2. प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, सरकारी रिकॉर्ड, बैंक डेटा का उपयोग।
3. डेटा सत्यापनः
4. विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का आपसी मिलान।
5. तालिकाओं और प्रतिशतों का प्रयोगः

6 सभी योजनाओं, संसाधनों, ऋण, अनुदान का वितरण तालिकाओं में।

7 श्रेणीवार और योजना–वार विश्लेषणः

8 लाभार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अनुसार वर्गीकरण।

9 स्रोतों का स्पष्ट उल्लेखः

10 प्रत्येक तालिका और आंकड़े के साथ स्रोत लिखना।

11 नियमित अपडेटः

12 डेटा का समय–समय पर अद्यतन और पुनः सत्यापन।

किस योजना में सबसे अधिक लाभार्थी हैं और उनका प्रतिश

तालिका 2: भौतिक परिसंपत्तियों का वितरण (240 परिवारों पर आधारित)

तालिका 2: भौतिक परिसंपत्तियों का वितरण (240 परिवारों पर आधारित)

भौतिक परिसंपत्ति	परिवारों की संख्या	प्रतिशत (%)
कृषि उपकरण	8	3.46
सिंचाई उपकरण	6	2.08
भैंस पालन	90	37.05
गाय पालन	52	21.66
सुअर पालन	20	8.33
बकरी पालन	23	9.58
ग्रामीण उद्योग	18	7.75
तृतीय क्षेत्र सेवाएं	21	8.75
अन्य	2	0.88
कुल	**240**	**100.00**

स्रोत:निजी सर्वेक्षण (आंकलन) वर्ष 2020-21

निष्कर्षः

सबसे अधिक लाभार्थी 'पशुपालन' (भैंस, गाय, सुअर, बकरी) में हैं, कुल 185 परिवार (77.08:)।

भैंस पालन में सर्वाधिक (37.05:) लाभार्थी हैं।

विभिन्न योजनाओं की तुलनात्मक प्रभावशीलता

तालिका 3: आर्थिक सहायता (अनुदान व ऋण) का वितरण

योजना/क्षेत्र	लाभार्थी परिवार	कुल अनुदान (₹)	प्रति परिवार अनुदान (₹)	कुल ऋण (₹)	प्रति परिवार ऋण (₹)
कृषि उपकरण	36	7,65,334	21,259	18,03,472	50,097
सिंचाई उपकरण	18	3,88,250	21,569	2,70,368	15,020
भैंस पालन	58	20,76,512	25,457	46,01,733	89,685
गाय पालन	32	9,50,634	26,582	8,70,051	30,314
सुअर पालन	22	2,85,636	8,438	1,91,179	13,235
बकरी पालन	26	2,65,216	6,354	3,00,027	15,385
ग्रामीण लघु उद्योग	18	9,65,210	53,622	22,99,525	1,27,751
तृतीय क्षेत्र सेवाएं	24	2,76,193	11,508	14,10,307	58,762
अन्य	6	6,62,214	1,27,035	12,000	3,333

स्रोत: कार्यालय जिला संख्याधिकारी जनपद-मैंनपुरी वर्ष 2019-20 एवं निजी सर्वेक्षण (आंकलन) वर्ष 2020-21

विश्लेषणः

भैंस पालन में सबसे अधिक लाभार्थी (58 परिवार) और प्रति परिवार सहायता भी सर्वाधिक।

ग्रामीण लघु उद्योग में प्रति परिवार अनुदान और ऋण राशि सबसे अधिक, पर लाभार्थियों की संख्या कम।

सिंचाई और कृषि उपकरणों में लाभार्थी एवं राशि दोनों कम, जो क्षेत्रीय असंतुलन दर्शाता है।

वंचित वर्गों के लिए उपलब्ध संसाधनों का विश्लेषण

तालिका 4: कृषकों की श्रेणीवार वितरण

कृषक श्रेणी	कुल परिवार (%)	कृषि उपकरण	सिंचाई	भैंस	गाय	सुअर	बकरी	ग्रामीण उद्योग	तृतीय क्षेत्र	अन्य
लघु कृषक	80 (33.33)	6	4	32	22	4	8	5	10	1
सीमान्त कृषक	129 (53.75)	2	2	46	25	10	6	6	8	1
उपसीमान्त कृषक	31 (12.94)	0	0	12	5	6	9	7	3	0

स्रोत: कार्यालय जिला संख्याधिकारी जनपद-मैंनपुरी वर्ष 2019-20

विश्लेषणः

• सीमान्त कृषकों को सर्वाधिक संसाधन मिले (53.75:), विशेषकर पशुपालन में।

• उपसीमान्त कृषकों को कृषि/सिंचाई उपकरण नहीं मिले, जिससे इन वर्गों के लिए नई योजनाएँ बनानी चाहिए।

• अनुसूचित जाति/जनजाति, भूमिहीन श्रमिकों के लिए भी योजनाओं की पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता।

• आंकड़ों की विश्वसनीयता और पारदर्शिता

स्रोतों की पारदर्शिता

• सभी आंकड़े कार्यालय जिला संख्याधिकारी जनपद–मैंनपुरी (2019–20) और निजी सर्वेक्षण (2020–21) से लिए गए हैं।

• तालिकाओं में प्रयुक्त सभी गणनाएँ (प्रतिशत, औसत) स्पष्ट रूप से दर्शाई गई हैं।

डेटा संग्रहण प्रक्रियाः

• लाभार्थियों का चयन सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर किया गया।

GJSSR

• सरकारी रिपोर्ट, बैंक रिकॉर्ड और प्रत्यक्ष सर्वेक्षण से डेटा की पुष्टि की गई।

विश्वसनीयता के लिए कदमः

• डेटा संग्रहण के दौरान दोहराव और त्रुटियों की जाँच।

सभी तालिकाओं में स्रोत का उल्लेख।

1 गणना पद्धति का स्पष्ट विवरण (जैसे, प्रतिशत = (लाभार्थी / कुल परिवार) 100)।

2 नीति–निर्माताओं के लिए सुझाव

3 कम लाभार्थी वाली योजनाओं (जैसे सिंचाई, कृषि उपकरण) में बजट और जागरूकता बढ़ाएं।

4 वंचित वर्गों के लिए लक्षित योजनाएँ बनाएं, विशेषकर उपसीमान्त कृषकों और भूमिहीन श्रमिकों के लिए।

5 पशुपालन और ग्रामीण उद्योगों की सफलता को अन्य क्षेत्रों में दोहराएं।

6 डेटा पारदर्शिता और निगरानी के लिए डिजिटल रिकॉर्डिंग और स्वतंत्र मूल्यांकन अपनाएं।

7 लाभार्थियों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता विकास कार्यक्रम चलाएँ।

8 लाभार्थियों को तकनीकी प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन दिया।

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनपद–मैंनपुरी में ग्रामीण विकास योजनाओं के तहत सर्वाधिक लाभार्थी पशुपालन क्षेत्र में हैं (77.08:), विशेषकर भैंस पालन (37.05:)। ग्रामीण उद्योगों और तृतीय क्षेत्र सेवाओं में भी लाभार्थी हैं, परंतु कृषि और सिंचाई उपकरणों का वितरण अपेक्षाकृत कम है। सीमान्त कृषकों को सर्वाधिक संसाधन मिले हैं, पर उपसीमान्त कृषकों, भूमिहीन श्रमिकों और अनुसूचित जातियों के लिए योजनाओं की पहुँच और बढ़ाने की आवश्यकता है। सटीक आंकड़ों, तालिकाओं और प्रतिशतों के प्रयोग से रिपोर्ट की पारदर्शिता और विश्वसनीयता बढ़ती है, जिससे नीति–निर्माताओं के लिए निर्णय लेना आसान होता है।

आगे की योजनाओं में वंचित वर्गों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधनों का समावेशी और संतुलित वितरण किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1. Dube, S. C. (1958). Contemporary India community development programme (p. 226).
2. Ginsberg, N. (1957). Natural resource and economic development. Annals of the Association of American Geographers, 47(1), 62.
3. Gilbert, & Locast. (1951). Some thoughts on the new geographical study development. Geographical Review, 41(2), 193–199.
4. Holder, B. W. (1973). Economic development in the tropics (pp. 44–45). London: [Publisher].
5. Pandy, P. N. (n.d.). The spirit of village economy: A concern for I.R.D.P. In Rural Integration (Vol. I, No. 2). Centre for I.R.D.P., B.H.U.
6. Pandey, P. N. (2000). *ग्रामीण विकास एवं संरचना परिवर्तन* [Rural development and structural change]. Jaipur: Rawat Publications.
7. Betille, A. (1969). Ideas and interests. International Social Science Journal, 21(2). UNESCO.
8. Office of the District Magistrate, Mainpuri. (2019–20). District statistical report. Mainpuri: Government of Uttar Pradesh.
9. Private Survey. (2020–21). Survey report on rural development schemes. [Unpublished manuscript].
10. United Nations. (1992). Demographic yearbook.

GJSSR